http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 2, 9-10

Article ID: 432

जैविक खेती: आज की जरुरत

सुशील, विकास, अंकुश कम्बोज एवं रोहतास कुमार

मृदा विज्ञान विभाग, चौ.च.सिं.ह. कृ.वि., हिसार

आजादी के बाद 70 के दशक में हरित क्रांति का प्रारंभ हुआ और तभी से रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों का उपयोग बढ़ता गया। बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह-तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग किया, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी बुरा प्रभाव पड़ा है। साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है। इन सब समस्याओं को देखते हुए काफी हद तक जैविक खेती के इन समस्याओ का समाधान है।

जैविक खेती क्या है?

जैविक खेती, खेती करने का वह तरीका है जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खाद, जैविक उर्वरक, जैविक कीटनाशकों, फसल अवशेष, प्राकृतिक खनिज का उपयोग किया जाता है। सन् 1990 के बाद से विश्व में जैविक उत्पादों का बाज़ार काफ़ी बढ़ा है।

जैविक खेती के उद्देश्य -

जैविक खेती का मुख्य उद्देश्य कृषि प्रणाली को अधिक **संतुलित, टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल** बनाना है। इसके तहत निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों को ध्यान में रखा जाता है:

1. **मिट्टी की उर्वरता और जैविक संरचना को बनाए रखना और सुधारना**- रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक खाद और हरी खाद का उपयोग कर मृदा स्वास्थ्य को सुरक्षित रखना।
2. **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण**- जल, वायु और भूमि को प्रदूषण से मुक्त रखना एवं पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता बनाए रखना।
3. **स्वस्थ एवं सुरक्षित खाद्य उत्पादन-** मानव स्वास्थ्य के लिए रासायन-मुक्त और पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराना।
4. **स्थायी कृषि प्रणाली को बढ़ावा देना-** दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ खेती की ऐसी प्रणाली विकसित करना जो आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिक रूप से लाभकारी हो।
5. **कृषकों की आत्मनिर्भरता एवं आय में वृद्धि-** स्थानीय संसाधनों पर आधारित खेती से लागत को कम करना और जैविक उत्पादों के बाज़ार मूल्य के माध्यम से किसानों की आय में वृद्धि करना।
6. **जैव विविधता का संरक्षण-** परंपरागत बीजों और स्थानीय प्रजातियों का प्रयोग कर जैव विविधता को बढ़ावा देना।

जैविक खेती के लाभ-

कृषकों की दृष्टि से लाभ

- भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है।
- सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है।
- रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में कमी आती है।
- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि।
- बाज़ार में जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से किसानों की आय में भी वृद्धि होती है|

मिट्टी की दृष्टि से

- जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।
- भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती हैं।
- भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा।

पर्यावरण की दृष्टि से

- भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है। भूमि के जल मे स्तर मे वृद्धि क्रिया शील होता हैं।
- मिट्टी, खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है।
- कचरे का उपयोग, खाद बनाने में, होने से बीमारियों में कमी आती है।
- मृदा में जैविक कार्बन में वृद्धि।
- वातावरण में हानिकारक गैसो का काम उत्सर्जन।

जैविक खेती में कठिनाइयां-

- जैविक अवशेषों का सग्रहण सरक्षण, उपचार व उपयोग कठिन प्रतीत होता है।
- जैविक नियंत्रण के लिये जैव कीटनाशकों व जैव कारकों को तैयार करना व लम्बे समय तक संरक्षित करना कठिन होता है।
- जैव कीटनाशकों व जैव उर्वरकों का असर सभी जगह समान रूप से व तुरन्त रूप से प्रभावी नहीं होता।
- फसल अवशेषों व पशु गोबर का क्रमश पशु चारे व जलावन के रूप में उपयोग।
- मल का खाद के रूप में प्रयोग करने से परहेज।
- सभी जैव अवशेष सुरक्षित नहीं है। मानव-गल, सूअर की विष्ठा शहरी कूड़ा करकट व बहाव जब तक सुरक्षित नहीं है जब तक कि उनका सुचारू रूप से उपचार न किया जायें।
- जैविक खेती के मानक आम काश्तकार की पकड़ से दूर व कठोर है।

जैविक खेती क्यों करें?

क्योंकि:-

- रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों की कीमत बढ़ती जा रही है।
- मानव व पशु भोजन की श्रृंखला मे रासायनिक अवशेष पाये जा रहे है जो दोनों के लिए नुकसान दायक है।
- उर्वरक व कीटनाशक उद्यम हमारी ऊर्जा का बहुत अधिक उपयोग कर रहे है। साथ ही पर्यावरण को प्रदूषितकर रहे है।
- सभी कृषि रसायन निर्माण इकाई अत्याधिक प्रदूषण फैलाती हैं।
- मृदा का खराब होना, मृदा व जल प्रदूषण, जल स्रोतों का कम होना पर्यावरण को एक गंभीर चुनौती है।
- कीटों में प्रतिरोधक क्षमता का विकास व इनका फैलाव पूरी फसल पद्धति को चुनौती देने लगा है।
- विश्वस्तर में कृषित भूमि का तेजी से बजर व अनुपजाऊ होना।